योगेंद्र यादव बनाम टाइम्स नाउ

...जब योगेंद्र यादव ने विवादास्पद टाइम्स नाउ को लाइव ही धो डाला

मजदूर मोर्चा ब्यूरो, नई दिल्ली

देश में बेगैरत मीडिया पूरी तरह सरकार के कदमों में लोटपोट करने को तैयार बैठा है, कब आदेश मिलें और वह लेट जाए। सीबीआई ने अपने ही दफ्तर में जब रिश्वतखोरी का मामला पकड़ा तो मीडिया में भी भूकंप आ गया। हर बड़ा अखबार और चैनल सरकार के साथ खड़ा हो गया और कुछ भी छापने या दिखाने के लिए तैयार हो गया। बेगैरत मीडिया की सबसे अग्रणी कमान टाइम्स नाउ चैनल की है जिसने चीखने चिल्लाने वाले अर्णब गोस्वामी के रिपब्लिक चैनल को भी इस मामले में पीछे छोड़ दिया है। देश में गिने चुने नेता या सामाजिक कार्यकर्ता हैं जो अपनी साफ सुथरी खरी बात कहने के लिए जाने जाते हैं। इन्हीं में एक नेता हैं योगेंद्र यादव। योगेंद्र ने एक दिन पहले टाइम्स नाउ चैनल का वो बुरा हाल किया है कि चैनल अब कभी शायद ही योगेंद्र यादव को किसी डिबेट में बुलाए।

यह डिबेट शो अंग्रेजी चैनल 'टाइम्स नाउ' में आयोजित किया गया था। इस शो में बतौर मेहमान योगेंद्र यादव को भी आमंत्रित किया गया था। हालांकि, शो यादव और चैनल की उम्मीदों के अनुरूप नहीं रहा। ऐसा इसलिए कि यादव ने अपने ट्विटर हैंडल से शो और उसकी होस्ट व 'टाइम्स नाउ' की मैनेजिंग एडिटर (पॉलिटिक्स) नविका कुमार दोनों पर सवाल उठाए हैं।

यादव ने अपने ट्वीट में लिखा, 'आज रात मुझे 'टाइम्स नाउ' के उस शो से वॉक आउट करना पड़ा, जिसकी एंकर नविका कुमार थीं। मुझे बताया गया था कि शो इस पर केंद्रित होगा कि आलोक वर्मा को हटाने से राजग की छवि कितनी प्रभावित हुई है। जबकि मुद्दा बदलकर संयुक्त निदेशक ए.के. शर्मा पर बहस की जाने लगी। यह बहुत ही शर्मनाक है। इसने पत्रकारिता को कलंकित कर दिया है'।

टाइम्स नाउ चैनल खड़ा करने वाले अर्णब गोस्वामी ने इस चैनल को चीखने चिल्लाने और फिजूल की देशभक्ति के मुद्दे उठाने के लिए खड़ा किया था। लेकिन फिर वह रिपब्लिक टीवी में चले गए। लेकिन जिस चैनल के डीएनए में अर्णब गोस्वामी मिला हो, उनकी जगह उसकी कमान संभालने वाली नाविका कुमार में वह सब गुण जन्मजात मिल गए। वह भी अर्णब की तरह बर्ताव करने में आगे है।

नाविका कुमार का बर्ताव भी अब धीरे-धीरे आजतक चैनल की अंजना ओम कश्यप की तरह होता जा रहा है। नाविका को भी विवाद में रहने की आदत पड़ गई है।

यादव ने जब लाइव चल रहे शो में डिबेट छोड़ने की घोषणा की तो एंकर नाविका कुमार को पसीने आ गए। हाल ही में राहुल को छोड़कर मोदी भक्त बने शहजाद पूनावाला समेत तमाम चंपुओं ने नाविका कुमार का समर्थन करना चाहा लेकिन किसी को कामयाबी नहीं मिली।

यादव को इस मुद्दे पर सोशल मीडिया यूजर्स का जबरदस्त समर्थन मिल रहा है। वरिष्ठ पत्रकार राजदीप सरदेसाई ने भी यादव के ट्वीट को लाइक किया है। यानी कहीं न कहीं वो भी योगेंद्र यादव की बात से सहमत दिखाई देते हैं।

यादव के ट्वीट को अब तक 8 हजार से ज्यादा लोग लाइक कर चुके हैं, जबकि इसे तीन हजार से ज्यादा बार रीट्वीट किया गया है और इसपर एक हजार के आसपास कमेंट हैं।

कई यूजर ने पत्रकार नविका कुमार को भी निशाना बनाया है। दीपेश चौहान नामक यूजर ने लिखा है 'आप जिस सहजता से बहस को संभालती हैं, मुझे बेहद पसंद है, लेकिन इस बार क्षमा करें आप निष्पक्ष नहीं हैं और उन मुद्दों के प्रति सहनशीलता नहीं दर्शातीं जिनसे आप सहमत नहीं हैं'।

इसी तरह, अमृत अग्रवाल ने सवाल किया है कि 'टाइम्स नाउ' ने डिबेट के विषय को लेकर यादव को गलत जानकारी क्यों दी?

विद्या सुब्रमणियम ने अपने ट्वीट में योगेंद्र यादव के लिए लिखा है 'मुझे समझ नहीं आता कि यह जानते हुए भी कि टाइम्स नाउ मोदी सरकार का पक्षधर है वहां क्यों जाते हैं'। वहीं, पारस इंडियन नामक यूजर ने ट्वीट किया है 'बहुत अच्छे यादवजी, सच्चे देशवासी आपके साथ हैं। नविका कुमार निष्पक्ष पत्रकार नहीं मोदी भक्त हैं।'

केंद्र के खिलाफ रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर ने भी मुंह खोला...

आरबीआई के डिप्टी गवर्नर ने केंद्र सरकार की घंटी बजाई

सीबीआई के बाद अब आरबीआई में आजादी छिनने से चिंता बढ़ी

नई दिल्ली (म.मो.) देश में तमाम स्वायत्त संस्थाओं (ऑटोनमस बॉडी) की आजादी या उनको उनकी प्रकृति के अनुरूप काम करने देने का मुद्दा गरमा रहा है। अभी तक सीबीआई से लेकर जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी समेत देश की तमाम स्वायत्त शिक्षण संस्थाओं की आजादी का मुद्दा गरमाता रहा है लेकिन अब भारतीय रिजर्व बैंक से भी यह आवाज उठी है। उसके डिप्टी गवर्नर विरल आचार्य ने कहा कि हमे आजादी दो, हमें स्वतंत्रता से काम करने दो। उसी आरबीआई से जहां केंद्र की सत्ता बदलने के बाद रिलायंस इंडस्ट्रीज में नौकरी कर चुके उर्जित पटेल को रघुराम राजन की जगह आरबीआई गवर्नर बना दिया गया।

डिप्टी गवर्नर आचार्य ने कहा है कि जो सरकार केंद्रीय बैंक की स्वतंत्रता का सम्मान नहीं करती है उसे वित्तीय बाजार की नाराजगी सहनी पड़ती है। डिप्टी गवर्नर ने कहा कि जो सरकार केंद्रीय बैंक को आजादी से काम करने देती है, उस सरकार को कम लागत पर उधारी और इंटरनेशनल

निवेशकों का प्यार मिलता है। उन्होंने आगे कहा कि ऐसी सरकार का कार्यकाल भी लंबा रहता है.

डिप्टी गवर्नर ने कहा कि आईबीआई ने मौद्रिक नीति ढांचे से संबंधित मामलों में अच्छी प्रगति की है। जीएसटी और दिवालिया संहिता में भी आरबीआई अच्छा काम कर रहा है। लेकिन रिजर्व बैंक की स्वायत्तता बरकरार रखने में कुछ जरूरी क्षेत्र हैं जो अभी कमजोर हैं। विश्व बैंक और आईएमएफ ने इन्हीं कुछ क्षेत्रों को भारत रिपोर्ट में भी शामिल किया है। आचार्य ने आगे कहा कि सबसे जरूरी यह है कि आरबीआई के पास सरकारी बैंकों पर कार्रवाई करने के सीमित अधिकार हैं।

विरल आचार्य ने कहा कि अर्थव्यवस्था के कई जरूरी कार्यों को केंद्रीय बैंक अंजाम देता है। आरबीआई ना केवल मुद्रा की आपूर्ति का नियंत्रण होम लोन, उधारी पर ब्याज दर भी तय करता है। इसके साथ ही वित्तीय बाजारों पर निगरानी रख नियमन करता है। डिप्टी गवर्नर ने आगे कहा कि दुनियाभर में केंद्रीय बैंकों का नेतृत्व करने वाले का चुनाव नहीं होता बल्कि सरकार उन्हें नियुक्त करती है। सरकार की निर्णय प्रकिया टी 20 मैच जैसी होती है जिसमें चुनाव जैसी कई मजबूरियां शामिल होती हैं। वहीं केंद्रीय बैंक टेस्ट मैच जैसी भूमिका निभाता है जिस पर किसी भी तरह का कोई दबाव नहीं होता है।

दिल्ली मदरसे के बच्चे की हत्या...

धर्म के नाम पर फासीवादी ताकतें फिर कामयाब

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली/मेवात: आठ साल के बच्चे मुहम्मद अज़ीम को भारत की राजधानी दिल्ली में उसकी धार्मिक पहचान की वजह से बेरहमी से मार डाला जाता है। अगर आप इस पर यह कह रहे हैं कि यह बच्चों का आपस का झगड़ा था, हेट क्राइम विश्व भर में होते हैं, इस हत्या का कोई राजनीतिक, समाजिक संदर्भ नहीं है तो बधाई। इस मुल्क में फ़ासीवादी ताक़तें कामयाब हो गयीं और आप उसका प्रमाण हैं। आप सिर्फ़ यह देख लें कि ये तर्क जो आप दे रहे हैं वह कल से आज तक तमाम सोशल मीडिया पर किसी मुस्लिम ने नहीं दिए; अब आप खुद से सिर्फ यह पूछ लें कि ऐसा क्यूं। बच्चे की हत्या को अब कोई अखबार क्रिकेट में बच्चों की आपसी लड़ाई, कोई गिल्ली डंडे की कहानी तो कोई तीसरी कहानी सुना रहा है। दिल्ली का मीडिया बच्चे के पिता का इंटरव्यू करने की बजाय पुलिस के बयान पर भरोसा कर रही है। मेवात के रीठठ गांव में जहां इस बच्चे को शुक्रवार को दफन किया गया, वहां किसी तथाकथित राष्ट्रीय मीडिया ने अपना रिपोर्टर या विडियोग्राफर भेजने की जरूरत नहीं समझी। जहां इस मीडिया को अजीम की मां और उसके मुहल्ले के लोग इस जघन्य हत्याकांड की असलियत बता देते।

इससे ज़्यादा ख़तरनाक और अफ़सोसनाक और कुछ भी नहीं कि किसी दलित, उत्पीड़ित समाज या समुदाय से जुल्म को जुल्म कहने का हक़ छीन लिया जाए। मगर शायद आपको समझा दिया गया है कि मुस्लिम समुदाय के बच्चों के साथ, उनकी औरतों के साथ यही होना चाहिये जो जुनैद और नजीब के साथ हुआ, वह सब जो गुजरात, मुज़फ़्फ़रनगर के दंगों में किया गया .. हालाँकि अब तो इस तरह की ख़बरों के लिए दंगों का इन्तज़ार भी नहीं करना पड़ता!

भय और नफ़रत की इसी राजनीति का नतीजा है यह हिंसा, जो दिन ब दिन हमारे समाज का सच बनती जा रही है, यह हिंसा जो हमें अब राजनीतिक भी नहीं लगती! नफ़रत और 'हेट-क्राइम' का हमारे ज़हनों में यूं नौरमलाइज़ कर दिया जाना! यह राजनीति जो हमें मजबूर कर देती है कि हम अपनी नौकरियाँ बचाये रखने के लिए सच को सच न कहें, जो हमे यह समझा देती है कि एक सच्चा इन्सान होने से ज़्यादा ज़रूरी है 'प्रो-एसटैबलिशमेन्ट' पोशचरिंग।

जबकि इस वक़्त इस मुल्क और समाज को सबसे ज़्यादा ज़रूरत इसकी है कि आप जैसे लिबरल, प्रोग्रेसिव अफ़सर, पत्रकार, वकील इस मज़लूम समुदाय के साथ खड़े रहें, कि आप सही को सही और ग़लत को ग़लत कहें। मुस्लिम समुदाय तो अपनी बात कहने की क्षमता ही नहीं रखता, इस समुदाय के नौजवान सिविल सर्विसेज़ में, पुलिस फ़ोर्स में, न्यायपालिका में, सरकारी नौकरियों में, उच्च शिक्षा में हैं ही कहां ! मगर निष्पक्षता की शपथ आपने भी ली थी, इनकी और हर शोषित समाज की तरफ़ से आपको बोलना था और इसीलिये आपका इस हिंसा को नौरमलाइज़ करना इस घटना के घटने से भी ज़्यादा दुखद है।

कुछ सवालों पर गौर करिए...

पिछले एक साल में कम से कम 15 बार मालवीय नगर के इस मदरसे के बच्चों की पिटाई इलाके के लोगों ने की। शराब की बोतलें मस्जिद के प्रांगण में डाली गईं। मस्जिद के सहन में रामलीला का रावण बनाया गया, विरोध के बाद भी नही हटाया गया। पिछले महीने जमात के बीच में शराब की बोतल फेंकी गई जिसमें शराब भी थी। पिछले जुमे में जुमे की नमाज के बीच मे पटाखे छोड़े गए। दो लड़कों को जिन्होंने असीम को मारा था उनको भीड़ छुड़ा कर ले गयी और इन लड़कों से कहा गया कि उनको कुछ भी नही होने दिया जाएगा। सरोज नाम की महिला जो लगातार मदरसे के बच्चों को प्रताड़ित करती रहती है धर्मिक भावनाएं भड़काती है, उसने कल फिर कहा कि अभी एक को मरवाया है अभी और मरवाएँगे।

इन तमाम घटनाओं की शिकायत लगातार बीट पुलिस ऑफिसर को दी गयी कोई कार्रवाई नही हुई।

यह घटना बताती है कि धार्मिक कट्टरपंथियों ने नफरत और उन्माद का जहर इस कदर समाज के पोर-पोर में भर दिया है कि बच्चों का दिमाग तक विषाक्त हो चुका है - 16 वर्षों पहले जो गुजरात में हुआ था, वह देश के किसी हिस्से में हो सकता है - नफरत की फसल अब पूरे देश में लहलहा रही है !

हमारा समाज बीमार, बेहद गंभीर रूप से बीमार है ! हमारे बच्चे भी धर्मोन्माद की इस हत्यारी मानसिक बीमारी की चपेट में आ चुके हैं ! लेकिन अभी भी समय है ! हो सके तो बच्चों को तो बचा लें, भविष्य को तो बचा लें ! धार्मिक कट्टरपंथी फासिज्म के विरुद्ध जमीनी स्तर से एक जुझारू प्रगतिशील सामाजिक आन्दोलन खड़ा करने के अतिरिक्त दूसरा कोई भी रास्ता नहीं है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06